अपनी बात

परमपूज्य माताजी से मुझे धार्मिक संस्कार मिले थे, तथा बचपन से ही विज्ञान में रुचि भी थी। अतः स्कूली शिक्षा के काल में ही धार्मिक एवं विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा विशेष रूप से हुई। सन् 1963 से 1966 के बीच स्वामी विवेकानन्द के हिन्दी में अनुवादित दस खण्डों में प्रकाशित प्रवचनों को पढ़ने का अवसर मिला, तो लगा, कि धर्म में विज्ञान समाहित है। तत्पश्चात् 1980 के दशक में स्वामी चिन्मयानन्दजी (अध्यक्ष-चिन्मया मिशन) के प्रवचन सुनने तथा उनके द्वारा उपनिषदों पर लिखी टीकाएं पढ़ने के पश्चात् यह विश्वास और दृढ़ हो गया। अन्त में 1990 के दशक में डॉ. फ्रिटजोफ कापरा की विश्वप्रसिद्ध पुस्तक *'Tao of Physics'* ने मुझे धर्म में निहित विज्ञान पर लिखने को प्रेरित किया। 1996 में ईश्वरीय प्रेरणा से पहला शोधपूर्ण लेख ***'गायत्री मंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या'*** लिखा गया, जिसको सिडनी (आस्ट्रेलिया) में खूब प्रचार मिला तथा भारत में भी प्रचार माध्यमों से इसका अच्छा प्रसार हुआ। इसके अनन्तर कई शोधपूर्ण लेख, जैसे - *(i)* ***'गो-मातृभूमि (पृथ्वी) का प्रतीक'*** *(ii)* ***'गंगा-आकाशगंगा का प्रतीक'*** *(iii)* ***'मूर्तिपूजा-एक वैज्ञानिक मीमांसा'*** *(iv)* ***'प्रतीक-विज्ञान'*** *(v)* ***'उपास्य देवों की वैज्ञानिक व्याख्या'*** *(vi)* ***'वैदिक शासन व्यवस्था-ऋषि तन्त्र'*** आदि भी लिखे गये। इन लेखों को कई पत्रिकाओं द्वारा प्रचार भी मिला, परन्तु ये सभी लेख वैदिक-धर्म के कुछ विशिष्ट बिन्दुओं को ही स्पर्श कर सके। ***अतः 'Tao of Physics' की भाँति धर्म का वैज्ञानिक आधार ढूँढ़ने की ललक ने इस पुस्तक को लिखने को प्रेरित किया।***

प्रकृति एक है, परमात्मा सबका एक है, सभी मानवों की प्रवृत्तियाँ एक जैसी हैं तथा प्रकृति के शाश्वत सिद्धान्त निश्चित हैं, इस विचार की गहराई में उतरते हुए विशुद्ध प्राकृतिक नियमों, जैसे - *(i)* ***चक्र का सिद्धान्त*** *(ii)* ***अनुलोम-विलोमता का सिद्धान्त*** *(iii)* ***पुनर्जन्म का सिद्धान्त*** *(iv)* ***कर्म का सिद्धान्त*** *(v)* ***यज्ञ (निष्काम कर्म) का सिद्धान्त*** *(vi)* ***यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे का सिद्धान्त*** आदि पर आधारित मानव-धर्म को इस पुस्तक के लेखन का विषय चुना गया।

वैदिक ऋषियों द्वारा खोजा गया ज्ञान का विशाल भण्डार भी इन्हीं प्राकृतिक सिद्धान्तों पर आधारित है, जिसे उन्होंने पदार्थ विज्ञान के सूक्ष्मतम अंश ***'प्रवृत्ति'*** *(Frequency)* के आधार पर निर्मित ***प्रतीकों*** की भाषा में लिखा है, जिससे जन सामान्य को सहजता से समझ में आ सके, अतएव इस पुस्तक में प्रवृत्तियों एवम् प्रतीकों के वैज्ञानिक विश्लेषण का प्रयास विशेष रूप से किया गया है। जनसाधारण की श्रद्धा को परिष्कृत करने हेतु, विश्वासों एवं मान्यताओं, प्रतीकात्मक कथाओं तथा पूजाओं एवं उपासनाओं के पीछे छिपी वैज्ञानिकता को उजागर करने का प्रयास भी किया गया है।

1970 के दशक में अगरतला (त्रिपुरा) प्रवास में एक सुप्रसिद्ध होम्योपैथ डॉ. घोष के उपचार से बचपन से चले आ रहे अनेक शारीरिक कष्टों से मुक्ति ही नहीं मिली, बल्कि उनसे

होम्योपैथी का ज्ञान भी प्राप्त हुआ। फलस्वरूप 1980 के दशक में होम्योपैथी पर एक शोध पुस्तक लिखी गई, जिसका सारांश एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका *HMAI* जनवरी *1982* के V/10 अंक में प्रकाशित हुआ। इस लेख पर पत्रिका के मुख्य संपादक डा. जे.एन. काँजीलाल ने अपनी टिप्पणी में कहा "यह शोध कार्य अति उच्च कोटि ***(Hypersophisticated)*** का है।" उनकी पूरी टिप्पणी पुस्तक के अन्त में है।

माननीय श्री अशोक अग्रवाल

पुस्तक की रचना में संस्था के माननीय संरक्षक महोदयों का मार्गदर्शन तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का वैचारिक रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है; विशेषकर **माननीय श्री अशोक अग्रवाल (B.Sc., L.L.B.)** का, जिनके कुशल सम्पादन के कारण पुस्तक का सहज रूप निखर कर सामने आ सका है। ***इस पुस्तक में यदि कुछ भी श्रेष्ठ है, तो इसका श्रेय मुख्य सम्पादक जी को है।*** देश-विदेश के माननीय सदस्यों के भावनात्मक समर्थन से लेखक को बड़ा सम्बल प्राप्त हुआ है। डॉ. अर्चना M.B.B.S., D.G.O., डॉ. अजय M.B.B.S., M.D. एवं डॉ. मनु रचना B.H.M.S. के सुझावों से पुस्तक की वैज्ञानिकता में वृद्धि हुई है। वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। लेखक समय-समय पर साहित्यिक मार्गदर्शन के लिए माननीय विश्वम्भरप्रसाद जी गुप्त, रघुनन्दनप्रसाद जी शर्मा एवं एन.पी.सुऐल का आभारी है। कु. सुनीता अरोड़ा द्वारा अनेक वर्षों तक टाइपिंग का कार्य बड़े धैर्यपूर्वक किया गया, वह सराहनीय है। इस पुस्तक का कुछ भाग ड्रीमलैण्ड पब्लिकेशन्स के द्वारा कम्पोज़ (Compose) किया गया तथा कई चित्र भी यथास्थान लगाये गये। लेखक प्रकाशक महोदय का आभारी है। अन्त में अपनी पूज्य दादीजी, जिनके त्यागपूर्ण स्नेह तथा लालन-पालन के कारण आज यह सब कुछ हो पाया है, को शत शत नमन करता हूँ।

प्रकृति-प्रदत्त धर्म के प्रति 'विश्व-समाज' आस्थावान बने, **मोक्ष-प्रवण समाज** रचना की अवधारणा को बल मिले एवं ***'वसुधैव कुटुम्बकम'*** के विचार की स्थापना हो, ऐसी मंगल कामना के साथ।

तन्मय

गायत्री धाम, बी-340, लोक विहार

28th October 2005